बाबू जुगलकिशोर जैन 'युगल' के साहित्य में निहित नैतिक मूल्य

डा. ऋषभ चन्द फौजदार
शोध-निर्देशक विभागाध्यक्ष,
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह

गणतंत्र जैन
शोध-छात्र
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह

"दार्शनिक होना केवल सूक्ष्म विचार रखना ही नहीं है, वरन् ज्ञान की उसतरह से आराधना करना है जिससे जीवन उसीमय हो सके"।

किसी विद्वान् की उक्त पंक्ति किसी भी व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने में समर्थ है । आज सम्पूर्ण विश्व में अनेक प्रकार के विद्वान्, लेखक, वक्ता, पण्डित, शिक्षक आदि से विभूपित लाखों लोग हैं जिन्होंने विचार का आदान-प्रदान तो पूर्णरूप से किया है किन्तु समाज, समुदाय या राष्ट्र का निर्माण हो ऐसा उनका कोई कृत्य कम ही देखने में आता है ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियों सहज ही स्मरित होती हैं –

हम कौन थे ? क्या हो गये हैं ? और क्या होंगे अभी ?

आओ विचारें बैठकर के, ये समस्यायें सभी ।।

ऐसे लेखनी, वाणी या पाण्डित्यपने का क्या लाभ ? जो किसी परिवार, समाज या राष्ट्र में जनचेतना का संचार न कर सके । वह लेखनी, वाणी या पाण्डित्य कौशल निष्फल है, जिसका नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं । हजारों लोगों में एक भी व्यक्तित्व की लेखनी / वाणी यदि नैतिक मूल्यों को बचा सकती है, तो वह व्यक्तित्व पूजनीय, वंदनीय है । वही सरस्वती का सपूत है । कहा भी है-

"एकमेव सुपुत्रेण, सिंहिनी स्वपिति निर्भयः"।

आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं ऐसे में जिस किसी भी माध्यम से हो सके नैतिक मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न करना चाहिये।

शिक्षा की चुनौती नीति सम्वन्धी परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार 1985 पृष्ठ क्रमांक 07 पर कहा भी है -

"सभी प्रकार के विचारशील लोग मूल्यों के तेजी से हो रहे ह्रास से तथा उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक जीवन में व्याप्त प्रदूषण से बहुत विक्षुब्ध हैं। वास्तव में मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति जिस प्रकार जीवन के अन्य अंगों में व्याप्त है उसी प्रकार स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों तथा शिक्षकों में व्याप्त है। इसे एक बहुत खतरनाक विकास के रूप में माना जाता है। अतः यह आग्रह किया जाता है कि शिक्षा की प्रक्रिया का पुनः अभिविन्यास किया जाये तथा युवकों को इस बात की पुनः अनुभूति करायी जाये कि इस तरह न तो शोपण, असुरक्षा तथा हिंसा को रोका जा सकता है और न ही किसी संगठित समाज को सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक मानदण्डों को स्वीकार किये और पालन किये बिना बनाये रखा जा सकता है। पिछले अनुभवों से यह सीखते हुये यह आशा की जाती है कि सुसंगत तथा व्यवहार मूल्य प्रणाली को ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाये जो जीवन के प्रति तर्कसंगत, वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित है"।

राष्ट्र के सम्बन्ध में विचार करने वाली इस कमेटी के सदस्यों को बाबू जुगलकिशोर जैन युगल के साहित्य का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। क्योंकि बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने अपनी पूरी साहित्य साधना में केवल मूल्य-परक विवेचना ही की है।

जिस समस्या से आज ये देश जूझ रहा है बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने उनका सैद्धान्तिक समाधान तर्क, युक्ति एवं भावना के बल पर अपनी वाणी और अपने साहित्य से दिया है । उन्होंने अपने साहित्य में निम्न मूल्यों को उजागर किया है -

1. नैतिक मूल्य 2. सामाजिक मूल्य 3. सांस्कृतिक मूल्य

4. शैक्षिक मूल्य 5. आर्थिक मूल्य 6. राजनीतिक मूल्य

7. धार्मिक मूल्य 8. आध्यात्मिक मूल्य 9. दार्शनिक मूल्य

जहाँ तक मूल्यों की बात है तो जीवन को शुद्ध करने व पवित्र भावना बनाने के लिये नैतिक मूल्यों की सर्वाधिक आवश्यकता होती है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने गद्य, पद्य की सभी विधाओं एवं सभी शैलियों में अपनी लेखनी का जीवन्त प्रमाण दिया ही है इसके अलावा सभी विधाओं में नैतिकता का साथ कहीं नहीं छोड़ा ।

बाबू जुगलकिशोर जैन युगल जहाँ कठोर अनुशासन के पक्षधर दिखायी पड़ते हैं तो वहीं जिनमार्ग के अनुसरण करने, दया पालने और करुणार्द्र चित्त की भावभूमि तैयार करने के लिये मातृवत् स्नेह उलेड़ते हुये दिखायी पड़ते हैं ।

बाबू जुगलकिशोर जैन युगल एकमात्र ऐसे लेखक हैं जिन्होंने सभी काव्य-विधाओं और गद्य-लेखन की लगभग सभी विधाओं को स्पर्श किया है । न केवल आपने स्पर्श किया अपितु उन विधाओं के माध्यम से जगज्जनों को अध्यात्म-सागर में स्नान करने का अवसर भी उपलब्ध कराया है ।

“प्रतिभायें लीक (लाइन) पर नहीं बल्कि लीक (लाइन) से हटकर चलती हैं परन्तु सच्ची व असल प्रतिभायें वे हैं जो लीक (लाइन) से तो हटें पर लीक (लाइन) से भटकें नहीं” ।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल जी के व्यक्तित्व को जनमेदिनी के समक्ष उपस्थित करने के लिये डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा लिखी ये पंक्तियाँ बाबू जुगलकिशोर जैन के व्यक्तित्व को परिभापित करने में सटीक बैठती है । क्योकि आप भी उन्हीं प्रतिभाओं में से एक हैं, जिन्होंने हर पहलू की सूक्ष्मता को अपनी लेखनी से व्यक्त किया है । आपके साहित्य में निहित मूल्य और उनकी अवधारणा पर कई विद्वान् लेखको ने आमेव्यक्ति दी है, परन्तु आपने जहाँ आध्यात्मिकता व सामाजिक एकता पर बल दिया, वहीं नैतिक मूल्यों को नहीं छोड़ा है ।

आपके साहित्य में नैतिक मूल्य कूट-कूट कर भरे हुये हैं । आपने जहाँ देव-शास्त्र-गुरू के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करके सर्वश्रेष्ठ विनय व उत्कृष्ट शिष्टाचार का परिचय दिया वहीं पूज्य गुरुदेवश्री का उपकार-स्मरण करके सार्थक शिष्यत्व का परिचय देकर अनुशासन, लौकिक विनय व नैतिकता का ध्यान रखा है । आपने अनेक व्याख्यानों में इस कृतज्ञता का परिचय अनेकों बार दिया है । इसके अलावा आपके साहित्य में निम्न नैतिक मूल्य भी उजागर हुये हैं –

1. ईमानदारी 2. त्याग 3. निष्ठा 4. करुणा

5. उत्तरदायित्व की भावना 6. नम्रता 7. सत्य-प्राप्ति की लालसा

8. दोष-स्वीकारोक्ति 9. मानवीयता 10. पारिवारिक एकता

11. आत्मैक्य की भावना 12. कर्त्तव्य-पालन

इन सब नैतिक मूल्यों का विवेचन बाबू जुगलकिशोर जैन युगल के साहित्य में वर्णित है जिनका क्रमशः वर्णन किया जा रहा है -

1. ईमानदारी - जीवन में सफलता पाने के लिये सबसे सरल और कठिन रास्ता है ईमानदारी । यदि व्यक्ति ईमानदार नहीं है तो वह जीवन में कुछ भी नहीं कर

सकता है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल के साहित्य में ईमानदारी के द्योतक कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

किसका करोगे विश्वास वसुन्धरा में ?

जड़ की नगरियों में जाने की मनाही है ।

अपना चरित्र क्यों गिराते पर की हविसों में,

स्वयं ही यशस्वी बन, बेहद अमराई है ।

- “विश्वास' मुक्तक

चैतन्य का स्मरण प्रतिपल करो रे !

भव के अनन्त दुःख को पल में हरो रे !

अक्षय-अनन्त निज सौख्य निदान पाओ,

गाओ, अरे ! बस इसी के गीत गाओ ।।

- चैतन्य के गीत

उक्त दोनों मुक्तक के आधार से देखें तो हम जान पायेंगे के बाबू जुगलकिशोर जैन युगल स्वयं भी अपने कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार रहे और अपनी लेखनी से जगत को यही सन्देश दिया ।

2. त्याग (समर्पण) - त्याग का अर्थ छोड़ना ही नहीं वरन् नैतिकता के आंकलन से देखें तो त्याग का अर्थ बलिदान और समर्पण भी है, जो हमेशा दूसरों के लिये होता है और वह समर्पण इतना कि स्वयं का सम्पूर्ण नाश भी बर्दाश्त हो जाये किन्तु सामने वाला प्रसन्न रहना चाहिये । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने अपनी अनेक प्रकाशित अपकाशित रचनाओं में त्याग, समर्पण और मोक्ष-प्राप्ति के लिये

सर्वस्व समर्पण की प्रेरणा दी है । इसी तरह का एक उदाहरण “शरद पूर्णिमा” कविता में व्यक्त किया है -

“अहो ! जब पारतन्त्र्य ही मृत्यु, कहो तब क्यों जीवन की आस ।

कभी क्या परतंत्र में मिला, किसी को जीवन का आभास ।।

बना है आज देश परतत्र, कर रथी तू क्रीडा का साज ।

त्याग री त्याग निठुर ! अब त्याग लगा दे निर्बल हिय में आग ।।

जगाकर जग को कर स्वाधीन, सिखा निज-गौरव से अनुराग ।

जाग जावें भारत के बाल सीख स्वाधीन प्रेम का पाठ ।।

3. निष्ठा - अपने आराध्य के प्रति पूर्ण व मजबूत आस्था का नाम ही सच्ची 'निष्ठा' है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने देवशास्त्रगुरु पूजन में इस बात के स्पष्ट संकेत दिये और उनके गुणगान में अमर-कृति की रचना की। पूज्यपद को नमस्कार करते हुये उन्होंने लिखा -

केवल रवि किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर ।

उस श्री जिनवाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन ।।

सद्दर्शन बोध चरण पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण ।

उन देव-परम-आगम गुरु को, शत् शत् वन्दन ! शत् शत् वन्दन ! ।।

एक और उदाहरण दृष्टव्य है -

“कलि पंचम में देवता, ताको नाम कहान ।

उड़ा दिया रे मौत का जन आँधी तूफान”।।

4. करुणा/दया - सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के दुःखों को देखकर दुःखी हो और आत्म-ग्लानिपूर्वक उन दुःखों को दूर करने का उद्यम करे । बाबू जुगल किशोर जैन युगल जब तक गुरुदेवश्री के संसर्ग में नहीं आये थे तब तक पर दया का साहित्य में स्थान रखा । जिसको हम मानव कविता में देख सकते हैं -

"शान्त हृदय सा बैठा मानव, हिय में आशा-जाल छिपाये ।

बेसुध, दीवाना, मतवाला, अपने रंग का साज सजाये ।।

क्यों कर जाने बहुविधि-गति, आभा का मुरझाया मानव ।

देख रहा नश्वर-जीवन को, आशा का ठुकराया मानव" ।।

5. उत्तरदायित्व की भावना - किसी भी कार्य की सफलता से यह परम आवश्यक है कि आप सबको संगठित कर सकें । यदि सभी संगठित हैं तो हर कार्य सफर है । यथोक्तं च "संघे शक्तौ कलौ युगे" अर्थात् संगठन में रहने पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथित्य का स्वतः भान होता है तथा नेतृत्वकार द्वारा दिया जाता है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल ने अपने साहित्य में समाज को संगठित रहने व स्वयं के दायित्व का निर्वाह करने की प्रेरणा दी है । जिसे हम बाबू जुगलकिशोर जैन युगल की एक रचना "उन्नत समाज" में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं -

हम कर्मवीर बनकर आगे, सत्वर समाज में आयेंगे,

अन्याय अनीति - बहाने को, हम बनकर घन छा जायेंगे ।

सब पाप और पाखंड मिटा हम प्रेग सुधा बरसावेंगे,

दुर्बल अरात्त को बढ़ आगे हम अपने गले लगायेंगे ।

रुग्ण समाज के स्वास्थ्य हेतु इस सत्वर यह उपचार करें ।

हिय में उमंग उत्साह लिये, हम उन्नत्ति पथ को प्यार करें ।।

6. दोष-स्वीकारोक्ति - स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ फल निश्चय ही वे देंगे । करें आप फल देय अन्य तो स्वयं किये निष्फल होंगे । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल की इन पंक्तियों के आधार पर यह सिद्ध किया कि व्यक्त्ति / जीव अपनी गलती का ठीकरा दूसरों के सिर फोड़कर स्वयं प्रसन्न रहना चाहता है जिससे इसका संसार निरन्तर बढ़ता जा रहा है । अतः बाबूजी स्वयं इस बात को मानते भी हैं कि अपने दोष स्वीकार करने पर ही जीव दोष-मुक्त होने की राह पर आगे बढ़ता है ।

7. सत्य प्राप्ति की लालसा - जीवन का शाश्वत लक्ष्य चरमोपलब्धि या सत्योपलब्धि है । इस सत्योपलब्धि के लिये व्यक्ति अनेक प्रकार के उपक्रम करता है, जिससे यथार्थ पक्ष का ज्ञान हो सके। ठीक भी है "स्वप्न या कल्पना जितनी मधुर होती है, यथार्थ उतना ही कटु । यथार्थ के धरातल पर ही जीवन की वास्तविकता के निर्मम सत्य का आभास हा पाता है" । इसी यथार्थ भावना या सत्य का ज्ञान कराने में बाबू जुगलकिशोर जैन युगल का साहित्य पूर्णतः सक्षम है ।

8. पारिवारिक एकता - बाबू जुगलकिशोर जैन युगल का साहित्य राष्ट्रीय और सामाजिक एकता का प्रतीक है । नैतिक मूल्यों के ह्रास से चिन्तित जहाँ एक कुनबा एकल परिवार की ओर मुड़ रहा है वहीं बाबू जुगल किशोर जैन युगल ने परिवार के विखण्डन को रोक एकता के सूत्र में बाँधने बँधे रहने के उपाय बताये हैं -

हो अगर रुढियाँ दूर, शीध यह हो सकता है उन्नत समाज,

संगठित आज हिल-मिलकर हम कर सकते बिगड़े सभी काज ।

जब क्षीण-सूत आपस में मिल बन जाता है रस्सी दृढ-वय,

तब उसे तोड़ने का साहस, करते उद्दण्ड पुरुप भी कम ।।

इस लिये परस्पर सभी आज, हम प्रेमपूर्ण व्यवहार करें.... ।

9. मानवीयता – "मनुष्य की पहिचान उसके मानवीय कर्म से है, विवेक से है, न कि आहार, भय, निद्रा और मैथुन से" । संस्कृत साहित्यकार ने स्पष्ट लिखा है कि ये चार संज्ञायें सभी प्राणियों में समान होती हैं, परन्तु मनुष्य में मानवीयता उन सब प्राणियों से पृथकता बताती है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल के साहित्य में मानवीयता का पल उजागर करने वाले उदाहरण दृष्टव्य हैं -

सब पाप और पाखंड मिटा हम प्रेम सुधा बरसावेंगे,

दुर्बल अरात्त को बढ़ आगे हम अपने गले लगायेंगे ।

10. आत्मैक्य की भावना - नैतिक मूल्यों में सर्वाधिक उपयोगी मूल्य है आत्मैक्य की भावना । जिसमें सभी जीवों का कपट स्वयं का कपट जैसा अनुभव होता हो तथा स्वपीड़ा का निदान पाने के लिये पर-द्रव्यों से दृष्टि हटाकर स्व-उपयोग में केन्द्रित करने का नाम आत्मैक्य की भावना है । बाबू जुगलकिशोर जैन युगल का साहित्य अधिकतम इसी भावना से ओत-प्रोत है । सर्वत्र अध्यात्म के साथ आत्मैक्य की प्रेरणा बाबू जुगल किशोर जैन युगल ने अपने कृतित्व से की है ।

इसके अतिरिक्त बाबू जुगल किशोर जैन युगल का साहित्य नम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, सहृदयता, निष्पक्षता आदि अनेक नैतिक गुणों से भरपूर है । वास्तव में देखा जाये तो पामर से ज्ञानी, पशु से परमात्मा तथा सच्चे मनुष्यत्व का दर्शन कराने वाला बाबू जुगलकिशोर जैन युगल का साहित्य नैतिक मूल्यों से भरा पड़ा है । आशा है लाभार्थी जीवन में नैतिकता का संचार करने के लिये नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के लिये बाबू जुगलकिशोर जैन युगल के साहित्य का अवलोकन अवश्य करेंगे ।

****

सन्दर्भ सूची -

1. बाबू जुगल किशोर जैन युगल, सम्पादक ब्र. नीलिमा जैन कोटा, चैतन्य वाटिका (द्वितीय संस्करण)

2. बाबू जुगल किशोर जैन युगल, सम्पादक ब्र. नीलिमा जैन कोटा, जैन क्षितिज के उदित नक्षत्र (प्रथम संस्करण)

3. बाबू जुगल किशोर जैन युगल, सम्पादक ब्र. नीलिमा जैन कोटा, चैतन्य की सुरभित पाँखुरियाँ (प्रथम संस्करण)

4. बाबू जुगल किशोर जैन युगल, सम्पादक ब्र. नीलिमा जैन कोटा, गुणावली सिद्धों की (2024)

5. बाबू जुगल किशोर जैन युगल, सम्पादक ब्र. नीलिमा जैन कोटा, चैतन्य की चहल-पहल